IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लोक साहित्य में आदिवासी जन जीवन

(Tribal Life in Folk Literature)

Author – Dr. Keshrimal Ninama, Assistant Professor Hindi, Govind Guru Tribal University, Banswara, Rajasthan.

Abstract : आदिवासी लोक साहित्य भारतीय समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता का अहम हिस्सा है, जो आदिवासी समुदायों के जीवन, संघर्षों, विश्वासों और परंपराओं को व्यक्त करता है। यह साहित्य मुख्य रूप से मौखिक परंपरा पर आधारित होता है और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता है, जिसमें गीत, कथाएँ, मिथक, नृत्य और लोककथाओं के माध्यम से आदिवासी जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया जाता है। आदिवासी लोक साहित्य में प्रकृति, कृषि, पशुपालन, सामूहिकता, संघर्ष, और धार्मिक आस्थाओं का प्रमुख स्थान है, जो उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान को सहेजते हैं। आदिवासी जन जीवन का लोक साहित्य न केवल उनकी सांस्कृतिक धरोहर और धार्मिक विश्वासों का दस्तावेज़ है, बल्कि यह उनके शोषण, संघर्ष और विद्रोह की कहानियों का भी प्रतीक है। यह साहित्य आदिवासियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, उनके द्वारा किए गए संघर्षों, और उनके अधिकारों की रक्षा के प्रयासों को भी दर्शाता है। आदिवासी समाज के विचार, नैतिक मूल्य, और सामाजिक संरचनाओं को समझने में यह साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Keywords : आदिवासी लोक साहित्य, आदिवासी जन जीवन, मौखिक परंपरा, गीत, कथाएँ, मिथक, नृत्य, लोककथाएँ, सामाजिक पहचान, संघर्ष, विश्वास, परंपराएँ, कृषि, पशुपालन, सामूहिकता, धार्मिक आस्थाएँ, शोषण, विद्रोह, नैतिक मूल्य, पारंपरिक ज्ञान, प्राकृतिक संसाधन, समुदाय, सामूहिकता, सांस्कृतिक धरोहर, जीवनशैली, अधिकार, सामाजिक संरचनाएँ, सांस्कृतिक विविधता, आदिवासी संस्कृति, जीवन दृष्टि, संघर्षों का सामना, शोषण का प्रतिकार, आदिवासी समाज, ऐतिहासिक संघर्ष, प्राकृतिक तत्त्व, आदिवासी संघर्ष, लोककला, आदिवासी नायक, संस्कृतियों की समझ, आदिवासी गाथाएँ।

Article : लोक साहित्य में आदिवासी जन जीवन एक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है। यह उनकी संस्कृति, परंपराओं, रीति–रिवाजों, विश्वासों और जीवन शैली का दर्पण है। आदिवासी लोक साहित्य में उनकी मौखिक परंपराएँ, गीत, कहानियाँ, मिथक, किंवदंतियाँ और नृत्य शामिल हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती हैं। आदिवासी लोक साहित्य वह साहित्य है जो आदिवासी समुदायों द्वारा अपनी संस्कृति, जीवनशैली, आस्थाओं, और परंपराओं को व्यक्त करने के लिए रचा जाता है। यह साहित्य मौखिक परंपरा के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता है और उसमें आदिवासी समाज की विश्व दृष्टि, उनके संघर्ष, और उनकी सांस्कृतिक विशेषताएँ प्रमुख रूप से व्यक्त होती हैं। आदिवासी लोक साहित्य की कुछ मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

मौखिक परंपरा– आदिवासी लोक साहित्य अधिकांशतः मौखिक होता है, जिसे कहानी, गीत, कविता, मिथक, लोककथा, लोकनृत्य, और नृत्य–नाटिका के रूप में व्यक्त किया जाता है। यह साहित्य ूतपजजमद नहीं बल्कि गाया और सुनाया जाता है। आदिवासी समाज के लोग अपने अनुभवों, आस्थाओं, और परंपराओं को गाने, नृत्य करने, और कथा सुनाने के माध्यम से जीवित रखते हैं।

प्राकृतिक तत्त्वों का प्रभाव – आदिवासी समाज का जीवन प्रकृति से गहरा जुड़ा हुआ होता है, और यह उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यहां पर काव्य रचनाओं में पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, नदियाँ, पहाड़, और अन्य प्राकृतिक तत्त्वों का विस्तार से चित्रण किया जाता है। ये सभी तत्त्व आदिवासियों के जीवन का अभिन्न हिस्सा होते हैं, जिनसे उनकी आस्था, विश्वास, और संघर्ष जुड़ा होता है।

कृषि और प्रकृति आधारित जीवनशैली – आदिवासी लोक साहित्य में कृषि, पशुपालन, और शिकार के विभिन्न पहलुओं पर जोर दिया जाता है। इनके साहित्य में ग्रामीण जीवन के संकटों और खुशियों को चित्रित किया जाता है। कृषि कार्यों और बदलते मौसम के साथ जुड़ी हुई कथाएँ, गीत, और कहानियाँ आदिवासी जीवन के अभिन्न भाग हैं।

पारंपरिक विश्वास और आस्थाएँ – आदिवासी समाज की अपनी विशिष्ट आस्थाएँ और विश्वास होते हैं, जो उनके लोक साहित्य में प्रकट होते हैं। देवी–देवताओं, प्रकृति की शक्तियों, और पूर्वजों की पूजा की परंपराएँ आदिवासी साहित्य का प्रमुख हिस्सा हैं। इस साहित्य में आदिवासी समाज के धार्मिक विश्वासों, पुरानी कथाओं और मिथकों का विस्तृत चित्रण होता है, जैसे लोक देवता, झार–फूंक, तंत्र–मंत्र आदि।

संघर्ष और विद्राह – आदिवासी लोक साहित्य में अक्सर उनके संघर्ष और विद्रोहों की कहानियाँ सुनाई जाती हैं। ये संघर्ष प्रकृति, शोषण, और बाहरी आक्रमणकारियों के खिलाफ होते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से आदिवासियों ने कई बार साम्राज्यवादियों, ज़मींदारों, और उद्योगपतियों से अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष किया है। इन संघर्षों को लोक साहित्य में बड़े ही रंगीन रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

सादगी और स्वाभाविकता – आदिवासी साहित्य की भाषा और शैली बहुत सरल और स्वाभाविक होती है। इसमें अधिक जटिलता या अलंकार का प्रयोग नहीं होता, क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य अपनी भावनाओं और विचारों को स्पष्ट और सीधा रूप से व्यक्त करना होता है। इसके गीत, कथाएँ, और नृत्य प्रकृति से निकले होते हैं और इनका स्वरूप भी प्रामाणिक और सहज होता है।

प्राकृतिक और सामाजिक न्याय – आदिवासी लोक साहित्य में सामुदायिक जीवन, सहयोग, और न्याय की अवधारणा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आदिवासी समाज में समृद्धि का मुख्य स्रोत सामूहिक प्रयास होते हैं, और साहित्य में यह पहलू प्रमुखता से दिखाया जाता है। आदिवासी समाज में व्यक्ति से ज्यादा समुदाय की अवधारणा महत्वपूर्ण होती है।

कला और शिल्प – आदिवासी लोक साहित्य में कला और शिल्प का बहुत बड़ा योगदान होता है। उनके गीतों, नृत्यों, और कथाओं में उनकी कला का समावेश होता है, जो उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है। आदिवासी समाज में संगीत और नृत्य का बहुत महत्व है, जो उनके साहित्य को और भी जीवंत बनाता है।

भाषाई विविधता – भारत में आदिवासी समुदायों की बड़ी संख्या है, और उनके पास विभिन्न भाषाएँ और बोलियाँ हैं। आदिवासी लोक साहित्य में इस भाषाई विविधता का परिलक्षण होता है, और यह साहित्य अपने स्थानीय और सांस्कृतिक संदर्भों को प्रतिबिंबित करता है।

संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण– आदिवासी लोक साहित्य एक तरह से उनके पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण करता है। इससे हम न केवल उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को समझ सकते हैं, बल्कि यह भी पता चलता है कि उनके पास कृषि, चिकित्सा, पर्यावरण, और अन्य जीवन के क्षेत्रों में किस प्रकार का पारंपरिक ज्ञान था।

आदिवासी लोक साहित्य के उदाहरण विविध रूपों में पाए जाते हैं, जो आदिवासी समाज के जीवन, संघर्षों, आस्थाओं, और परंपराओं को व्यक्त करते हैं। इन उदाहरणों में गीत, कहानी, मिथक, लोककथा, और नृत्य शामिल होते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख उदाहरण दिए जा रहे हैं:

आदिवासी गीत – आदिवासी गीत उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। ये गीत उनके कामकाजी जीवन, प्रेम, विवाह, उत्सव, और धार्मिक आस्थाओं से जुड़े होते हैं। गीतों का उद्देश्य न केवल मनोरंजन होता है बल्कि यह आदिवासी समाज के सामाजिक ढांचे और जीवन के अनुशासन को बनाए रखने में भी सहायक होते हैं।

"झुमर गीत" : यह एक प्रसिद्ध आदिवासी लोकगीत है, जो विशेष रूप से झारखंड, बिहार, और ओडिशा के आदिवासी समुदायों में गाया जाता है। यह गीत विवाह, उत्सवों और प्राकृतिक बदलावों से जुड़ा होता है। इसमें प्राकृतिक सौंदर्य और प्रेम की भावना का सुंदर चित्रण होता है।

सोनहा गीत : यह गीत छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के आदिवासी समुदायों में गाया जाता है। इसमें कृषि और परिवार के जीवन से जुड़ी बातें होती हैं, जिसमें प्रेम, संघर्ष और सुख–दुख की बातें होती हैं।

आदिवासी लोक कथाएँ – आदिवासी लोक कथाएँ उनके विश्वास, परंपराओं, और संघर्षों का खजाना होती हैं। ये कहानियाँ उनके जीवन के अनुभवों, महान नायक–नायिकाओं, और देवताओं की कहानियाँ होती हैं। इन कथाओं के माध्यम से आदिवासी समाज अपने नैतिक मूल्य और आदर्शों को बच्चों तक पहुँचाता है।

बाघ और शेर की कहानी – यह एक आदिवासी लोक कथा है जो झारखंड और मध्यप्रदेश के आदिवासी समुदायों में सुनाई जाती है। इसमें बाघ और शेर के बीच की संघर्ष को प्रतीक रूप में दिखाया जाता है, जिसमें बाघ अपनी ताकत और चतुराई के माध्यम से शेर को हराता है। इस कहानी में साहस और रणनीति के महत्व को दर्शाया जाता है।

डोंगरिया राजा और देवता – यह एक प्रसिद्ध कथा है जो ओडिशा के डोंगरिया आदिवासियों के बीच प्रचलित है। इसमें डोंगरिया राजा अपने लोगों की भलाई के लिए देवताओं से सहायता मांगता है और फिर उसकी संघर्षों में विजय प्राप्त करता है।

मिथक और धार्मिक कथाएँ – आदिवासी समाज में धार्मिक मिथक और कथाएँ महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। ये कथाएँ उनके देवताओं, रीतियों–रिवाजों, और प्राकृतिक शक्तियों से संबंधित होती हैं। ये आदिवासी समाज की आस्थाओं और विश्वासों को प्रकट करती हैं।

"माँ बोंदरी की कथा" : यह कथा बिहार और झारखंड के आदिवासी समुदायों के बीच प्रचलित है। इसमें माँ बोंदरी के देवत्व और उनके द्वारा आदिवासियों की रक्षा करने की कथा है। यह कथा श्रद्धा, बलिदान, और संरक्षण के प्रतीक के रूप में आदिवासी समुदाय में महत्वपूर्ण है।

"सांदीबु और मामा" : यह मिथक आदिवासी समुदायों में प्रचलित है जिसमें सांदीबु नामक नायक को अपने मामा से मिलने के लिए लंबी यात्रा करनी पड़ती है। यह कथा संघर्ष और आस्था का प्रतीक मानी जाती है।

नृत्य और नृत्य–नाटिका – आदिवासी समाज में नृत्य और नृत्य–नाटिका का भी बहुत बड़ा महत्व है। ये नृत्य उनके धार्मिक विश्वासों, सामाजिक रीति–रिवाजों और उत्सवों से जुड़े होते हैं। आदिवासी लोक साहित्य का यह रूप उनके सांस्कृतिक और कलात्मक जीवन को व्यक्त करता है।

"सांस्कृतिक नृत्य" : आदिवासी समाज के विभिन्न समुदायों में नृत्य की परंपरा प्रचलित है। जैसे मंझी नृत्य (झारखंड), गोंडी नृत्य (मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र) आदि। इन नृत्यों में प्रकृति, देवताओं, और सामूहिकता की भावना को व्यक्त किया जाता है।

"पोहा नृत्य" : यह आदिवासी समुदायों में गाया जाता है, जिसमें देवताओं की पूजा के लिए गीत गाए जाते हैं और एक साथ सामूहिक रूप से नृत्य किया जाता है।

प्राकृतिक और ऐतिहासिक कथाएँ – आदिवासी लोक साहित्य में प्राकृतिक घटनाओं और ऐतिहासिक संघर्षों का चित्रण मिलता है। इन कथाओं में प्राकृतिक शक्तियों का सामना करना और अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए लड़ाई करना प्रमुख विषय होते हैं।

बाँस की कहानी : यह आदिवासी लोककथा विशेष रूप से असम और बंगाल के आदिवासी समुदायों में प्रचलित है। इसमें बाँस के महत्व और उसकी उपयोगिता को लेकर एक सांस्कृतिक कथा है, जो इस प्राकृतिक संसाधन से जुड़ी आदिवासी परंपराओं और विश्वासों को उजागर करती है।

आदिवासी गाथाएँ – आदिवासी गाथाएँ उनके महान नायकों, देवताओं, और ऐतिहासिक संघर्षों का वर्णन करती हैं। इन गाथाओं में आदिवासी समाज की वीरता, साहस और विश्वास को प्रस्तुत किया जाता है।

"कालू महाराज की गाथा" : यह गाथा मध्यप्रदेश और राजस्थान के आदिवासी समुदायों में प्रचलित है, जिसमें कालू महाराज नामक नायक की वीरता और उसकी अपने समुदाय के लिए की गई बलिदान की कहानी है। आदिवासी लोक साहित्य विविध रूपों में पाया जाता है, जो उनके जीवन, संघर्ष, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाता है। यह साहित्य उनके मौलिक जीवन दृष्टिकोण, प्राकृतिक सौंदर्य, और सामूहिकता के प्रतीकों को जीवित रखता है। आदिवासी समाज का यह साहित्य न केवल उनके इतिहास और संस्कृति का आदान–प्रदान करता है, बल्कि यह हमें उनके अस्तित्व की गहरी समझ भी प्रदान करता है।

आदिवासी लोक साहित्य का महत्व न केवल आदिवासी समाज के लिए, बल्कि समग्र भारतीय समाज और वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर के लिए भी अत्यधिक है। यह साहित्य आदिवासी समाज की जीवनशैली, आस्थाओं, संघर्षों, और सांस्कृतिक विशेषताओं का सजीव और प्रामाणिक दस्तावेज़ है। इसके माध्यम से हम आदिवासी जीवन, उनके विचार, उनकी परंपराएँ, और उनके अद्वितीय दृष्टिकोण को समझ सकते हैं। आदिवासी लोक साहित्य का महत्व कई दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है:

संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण – आदिवासी लोक साहित्य आदिवासी समाज की सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं को जीवित रखने का एक प्रमुख माध्यम है। आदिवासी समाज की मौखिक परंपराओं में गाए जाने वाले गीत, कथाएँ, और मिथक उनके जीवन के मूल्य, विश्वास और परंपराओं को सहेजने का कार्य करते हैं। ये परंपराएँ पीढ़ी दर पीढ़ी, सामाजिक आयोजनों और जीवन के विभिन्न पहलुओं के माध्यम से लोगों में स्थानांतरित होती हैं, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हैं। उदाहरण: जैसे आदिवासी समाज के लोकगीत (झुमर, सोनहा) विवाह, कृषि कार्य, उत्सव, और धार्मिक अनुष्ठानों के बारे में बताते हैं, जो उस समाज की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करते हैं।

आध्यात्मिक और धार्मिक ज्ञान का संरक्षण – आदिवासी लोक साहित्य धार्मिक आस्थाओं, विश्वासों, और देवताओं के प्रति आदिवासी समाज की श्रद्धा का प्रकट रूप है। इसके माध्यम से हम आदिवासी समाज की धार्मिक परंपराओं और देवता–पूजा की अवधारणाओं को समझ सकते हैं। आदिवासी लोक साहित्य में देवताओं की कहानियाँ, उनकी पूजा विधियाँ और उनके जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं का विवरण मिलता है। उदाहरण: "माँ बोंदरी की कथा" और "डोंगरिया राजा और देवता" जैसी कथाएँ आदिवासी धर्म और आस्थाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो समाज के धार्मिक विचारों को दर्शाती हैं।

सामाजिक और नैतिक शिक्षा – आदिवासी लोक साहित्य का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह समाज को नैतिक शिक्षा प्रदान करता है। इसके माध्यम से आदिवासी समाज के लोग अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ी को अच्छे और बुरे के बीच अंतर समझाते हैं। ये कथाएँ, गीत और मिथक अच्छाई, सच्चाई, और सत्य की महत्वपूर्ण अवधारणाओं को उजागर करती हैं। ये समाज को सहयोग, सामूहिकता, और प्रेम की भावना से जोड़ने का कार्य करती हैं। उदाहरण: आदिवासी लोक कथाएँ, जैसे "बाघ और शेर की कहानी," बच्चों को साहस, चतुराई और संघर्ष के महत्व के बारे में सिखाती हैं।

प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण के प्रति जागरूकता – आदिवासी लोक साहित्य में प्राकृतिक तत्त्वों और संसाधनों की प्रमुखता होती है। आदिवासी समाज प्रकृति से गहरे जुड़ा हुआ होता है, और उनके साहित्य में पेड़–पौधे, नदियाँ, पहाड़, पशु–पक्षी, आदि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये कथाएँ प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने, उनके महत्व को समझने और उनका संरक्षण करने के बारे में जागरूकता फैलाती हैं। उदाहरणः "बाँस की कहानी" आदिवासी समुदायों के लिए इस प्राकृतिक संसाधन की महत्ता को स्पष्ट करती है, और यह उनके जीवन में बाँस की भूमिका को उजागर करती है।

सामाजिक संघर्षों और आंदोलन की पहचान – आदिवासी लोक साहित्य में सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों का भी विस्तृत चित्रण मिलता है। यह साहित्य आदिवासी समुदाय के ऐतिहासिक संघर्षों, जैसे भूमि अधिकारों, शोषण के खिलाफ संघर्षों, और साम्राज्यवादियों के खिलाफ लड़ाई की गवाही देता है। यह उन आंदोलनों और संघर्षों की पहचान को जीवित रखता है, जो आदिवासी समाज ने अपने अधिकारों की रक्षा के लिए किए हैं। उदाहरणः आदिवासी लोक साहित्य में उनके संघर्षों को प्रमुख रूप से दर्शाया जाता है, जैसे कि "कुण्डली मंझी" और अन्य लोककथाएँ जो आदिवासियों द्वारा साम्राज्यवादी ताकतों और शोषणकर्ताओं के खिलाफ संघर्षों की व्याख्या करती हैं।

भाषाई और सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक – आदिवासी लोक साहित्य भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत के विभिन्न हिस्सों में आदिवासी समुदायों की विविध भाषाएँ और बोलियाँ हैं, और उनके लोक साहित्य में इन भाषाओं का अद्वितीय योगदान है। इससे भारतीय समाज की भाषाई विविधता को समझने और स्वीकारने में मदद मिलती है। उदाहरणः झारखंड, मध्यप्रदेश, ओडिशा, और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों के आदिवासी समुदायों के लोक साहित्य में अलग–अलग भाषाएँ और बोलियाँ देखने को मिलती हैं, जैसे संथाली, गोंडी, मुंडारी आदि।

वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर – आदिवासी लोक साहित्य का महत्व सिर्फ भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है। यह साहित्य मानवता के इतिहास, संस्कृतियों, और परंपराओं की समझ को बढ़ाता है और हमें विभिन्न सामाजिक समूहों के जीवन की वास्तविकताओं से अवगत कराता है। उदाहरणः आदिवासी लोक साहित्य में उनकी कला, संगीत, और नृत्य की परंपराएँ भी शामिल हैं, जो न केवल भारतीय बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा हैं।

शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ आवाज – आदिवासी लोक साहित्य शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ एक सशक्त आवाज बनकर उभरता है। इसमें आदिवासियों के अधिकारों की रक्षा करने की प्रेरणा मिलती है, साथ ही यह साहित्य उनके अधिकारों के लिए उनकी संघर्षों को भी उजागर करता है। यह साहित्य उनके अस्तित्व, स्वायत्तता और स्वतंत्रता की लड़ाई को दर्ज करता है। उदाहरणः आदिवासी गाथाएँ और कथाएँ उनके संघर्षों और विद्रोहों को प्रदर्शित करती हैं, जैसे कि उनके भूमि अधिकारों, वनाधिकारों, और अन्य संघर्षों के खिलाफ उठी आवाजें।

निष्कर्ष : आदिवासी लोक साहित्य उनके जीवन, संघर्ष, आस्थाओं और संस्कृति का संवेदनशील और सजीव दस्तावेज़ है। यह साहित्य आदिवासी समाज की वास्तविकताओं, उनके परंपराओं, और उनके संघर्षों का अनमोल प्रतीक है। इसमें प्रकृति, धर्म, संघर्ष और समुदाय की परिकल्पना है, जो आदिवासी संस्कृति और उनके जीवन के मूल्यों को उजागर करती है।

References :

1. आदिवासी समाज एवं संस्कृति विनय कुमार शर्मा, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. आदिवासी स्वर और नई शताब्दी रमणिका गुप्ता, – वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
3. शर्मा, विसाला, कोल्हारे, दत्ता, आदिवासी साहित्य एवं संस्कृति, स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली।
4. सोनवने, व्हरु, जनेऊ साहित्यः संस्कृति तथा अस्मिता, साहित्ये जनेऊ एवं संस्कृति।
5. गुप्ता, रमणिका, आदिवासी चेतना, साहित्य व संस्कृति का मूल्यांकन आदिवासी साहित्य व संस्कृति।